

सहरसा जिला में वन विना 1 एवं बगीचा के विकास का भौगोलिक अध्ययन

डॉ लाले वर राय

बी० ए० मंडल वि विद्यालय, मधेपुरा

Date of Submission: 15-11-2020

Date of Acceptance: 30-11-2020

सारांश :- सहरसा जिला बिहार के कोशी मैदान के दक्षिणी पश्चिमी भाग में अवस्थित कोशी नदी निक्षेपित जलोढ़ मैदान है। सम्पूर्ण प्रदेश उपजाऊ एवं सघन वसाव क्षेत्र है। जनाधिव्य के कारण भोजन सम्बन्धी आवश्यकता की पूर्ति हेतु प्राकृतिक वनस्पति (वन) को साफ कर कृषि योग्य भूमि बनाया गया। वन विना 1 में सदियों से कोशी की विनाकारी बाढ़ भी सहायक रहा है। मानव अपनी आवश्यकता की पूर्ति पुनः वन का विकल्प बगीचा के रूप में विकसित किया है। इसमें अधिकांश फलदायी एवं इमारती लकड़ी वाले वृक्ष लगाये जाते हैं। जिसका उपयोग पर्यावरण संरक्षण के साथ मानव के लिए उपयोगी है।

भूमिका :- वनस्पति सम्पूर्ण जन्तु जगत का वास्तविक क्षेत्र है। मानव निवास भी आदिम काल से ही वनस्पति क्षेत्रों में रहा है, जहाँ उसकी भोजन वस्त्र एवं आवास सम्बन्धित मौलिक आवश्यकताओं की पूर्ति वन से होती थी। आज भी मानव का वास्तविक क्षेत्र वनस्पति क्षेत्र में है जहाँ मानव की मौलिक आवश्यकताओं की पूर्ति होती है। वास्तविक क्षेत्र के सभ्य मानव वन को साफ कर स्वयं वनस्पति उगाने लगा, जिसे फसल कहते हैं। विभिन्न प्रकार की फसलें मानव के भोजन, वस्त्र एवं आवास सम्बन्धित आवश्यकताओं की पूर्ति करता है। आज भी आदिम मानव का जीवन चक्र वन क्षेत्र के प्राकृतिक पर्यावरण में प्रकृति के नियमों का पालन करते हुए अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति वन से करता है। वन से प्राण आयु ऑक्सीजन, विभिन्न प्रकार के औषधि, ऊर्जा के लिए लकड़ी तथा अन्य आवश्यकताओं की पूर्ति करता है। मानव के लिए वनस्पति इतना उपयोगी है कि जन्म से पूर्व एवं मृत्यु के बाद भी वनस्पति की आवश्यकता होती है। वन क्षेत्र प्राचीन शिक्षा का केन्द्र रहा है जो ऋषि मुनि का साधना एवं ज्ञान विज्ञान का केन्द्र था। उस समय का सूक्ष्म विज्ञान तक पहुँच आज के मानव में नहीं हो सका है।

अध्ययन क्षेत्र :- सहरसा जिला बिहार में अवस्थित कोशी प्रमण्डल का एक जिला है, जिसका सीमांकन निर्धारण उत्तर में सुपौल जिला, दक्षिण में खगड़िया जिला, पूरब में मधेपुरा तथा पश्चिम में दरभंगा जिला के मध्य अवस्थित है। सहरसा जिला का ज्यामितीय अवस्थिति में अक्षांश 25° 35' N से 26° 28' N तक देणान्तीय विस्तार 86° 19' E से 87° 09' E तक फैला हुआ है। उसकी अधिकतम लम्बाई 72 किलोमीटर तथा अधिकतम चौड़ाई 65 किलोमीटर एवं सागर तल से 40 से 47 मीटर उँचा है। जिला का कुल क्षेत्रफल 1704 वर्ग किलोमीटर है, जिसमें ग्रामीण क्षेत्रफल 1685 वर्ग किलोमीटर तथा नगरीय क्षेत्रफल 21.13 वर्ग किलोमीटर है। यहाँ की कुल जनसंख्या 1897102 तथा घनत्व 1125 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर है।

परिकल्पना :- परिकल्पना काल्पनिक प्रस्तावना है। जो किसी समस्या के समाधान की अवधारणा प्रस्तुत करता है। यह भाोध कार्य का सैद्धान्तिक आधार है, जो भाोध कार्य प्रारंभ से पूर्व निर्धारित किया जाता है। प्रस्तुत आलेख में वनस्पति के बदलता स्वरूप की चर्चा की गई है। प्रारंभ में सम्पूर्ण प्रदेश में वन आच्छादित था लेकिन जनसंख्या वृद्धि के साथ सम्पूर्ण क्षेत्र के वन को साफ कर कृषि भूमि बनाया गया। वनस्पति मानव की मौलिक आवश्यकताओं में है। अतः वन का होना अनिवार्य है। प्रस्तुत आलेख में निम्न परिकल्पना प्रस्तुत की गई है।

1. वनस्पति मानव के मौलिक आवश्यकताओं की पूर्ति आदिम काल से करता आया है। लेकिन सहरसा जिला में वन क्षेत्र नगण्य है।

2. वन का विकल्प दूढ़ना अनिर्वाय आवश्यकता है।
 3. वन के स्थान पर बगीचा का विकास किया गया है।
 4. बगीचा वन की अपेक्षा अधिक क्रमवद्ध एवं लाभदायी होता है।
 5. वन प्रकृति की देन है, जबकि बगीचा मानवकृत है।
- विधितंत्र :-** प्रस्तुत आलेख वनस्पति से सम्बन्धित विविध आँकड़ों का संग्रह अनेक स्रोतों से किया गया जो निम्नांकित हैं—
- i. प्राथमिक आँकड़ों का संग्रह स्वयं भ्रमण कर व्यक्तिगत साक्षात्कार, प्रनावली आदि विधियों से संग्रह किया गया।
 - ii. द्वितीय आँकड़ों का संग्रह सहरसा वन विभाग से किया गया।
 - iii. जिला सांख्यिकी विभाग से आँकड़ों की प्राप्ति।
 - iv. सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त मानचित्रों को प्रयोग किया गया है।
 - v. मानचित्र एवं आरेख बनाने में नवीन तकनीकी का प्रयोग किया गया है।

वनस्पति, प्राकृतिक वातावरण एवं मनुष्य

वनस्पति प्राकृतिक वातावरण महत्वपूर्ण उपज है। यही मनुष्य को प्राकृतिक वातावरण से संबंध स्थापित कराती है। वनस्पति प्रकाश-संश्लेषण के माध्यम से पर्यावरण व्याप्त सौर्य ऊर्जा एवं विविध रसायनों को ग्रहण कर धरातल पर विशाल जैव-पुंज का निर्माण करती है। इस तरह यौगिक कार्बनिक तत्वों का निर्माण करने वाली इन वनस्पतियों को प्राथमिक उत्पादक कहते हैं। इन प्राथमिक उत्पादकों पर आश्रित विभिन्न प्रकार के उपभोक्ता (जीव-जन्तु) पाये जाते हैं, जो शाकाहारी कहलाते हैं। इन शाकाहारी जीव-जन्तुओं पर मांसाहारी जीव-जन्तु निर्भर करते हैं। मनुष्य इन सभी पर निर्भर रहता है। मानव संस्कृति का विकास वनस्पतियों के उपयोग एवं जानवरों को पालतू बनाने के पश्चात् ही संभव हुआ है। मनुष्य वनस्पति से अपनी भौतिक आवश्यकताओं की चीजें जैसे खाद्य-पदार्थ, ईंधन, वस्त्र, आवास, औषधियाँ तथा अन्य उपभोक्ता वस्तुयें प्राप्त करता है। शरीर के विकास और क्रियाशीलता के लिए वह वनस्पतियों से कार्बोहाइड्रेट, प्रोटीन, वसा तथा विविध खनिजों को प्राप्त करता है। इस तरह वनस्पतियाँ मनुष्य के लिए संसाधन का प्रमुख स्रोत होती हैं। किसी स्थान के वनस्पतियों की प्रकृति को देखकर ही वहाँ के वनस्पति संसाधनों के विषय में अनुमान लगाया जा सकता है।

वनस्पतियाँ पारिस्थितिकी-तंत्र की क्रियाशीलता को बनाये रखती हैं। ज्ञातव्य है कि पारिस्थितिकी जैविक एवं अजैविक घटकों का संगठित रूप है, जिसका संतुलन ऊर्जा की गतिशीलता एवं पुनर्पोषण पर निर्भर करता है। पारिस्थितिकी का गठन अनेक तंत्रों एवं उपतंत्रों से होता है, जो चक्रीय अवस्था में अन्तर्सम्बन्धित होते हैं। पारिस्थितिकी तंत्र के जैविक घटकों को पोषक तत्वों की प्राप्ति जैव-भू-रसायक चक्र विधि से होती है। इस चक्र में वनस्पतियाँ महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। पौधे-पत्तियों के माध्यम से सौर ऊर्जा तथा जड़ों से पोषक खनिज प्राप्त कर संश्लेषण क्रिया द्वारा अपना भोजन बनाये हैं और अपने अंगों की रचना करते हैं। इन्हीं वनस्पतियों के आधार पर विभिन्न जीव-जन्तु अपनी-अपनी भूमि का निर्वाह करते हुए क्रियाशील रहते हैं। इस तरह वनस्पतियाँ प्राकृतिक एवं जैविक दोनों तरह के वातावरण से जुड़ी रहती हैं। तब जैव-भू-रसायन-चक्र की क्रियाशीलता में परिवर्तन अवश्यम्भावी है। इस तरह पारिस्थितिकी तंत्र में जैविक तत्वों की क्रियाशीलता

वनस्पतियों पर निर्भर करती है। मनुष्य अपनी आजीविका की प्राप्ति तथा सांस्कृतिक विकास के लिए प्रत्यक्ष या परोक्ष इन दोनों तरह के वातावरण से संसाधन प्राप्त करता है। सांस्कृतिक विकास का इतिहास यह बताता है कि मनुष्य ने दोनों तरह के वातावरण का दोहन किया है। वह अपने प्रारंभिक चरण में (पुरा पाषाण काल) जानवरों की भाँति जीवन बिताता था। वह प्रधानतः वनस्पतियों से प्राप्त कन्द, मूल फल तथा वन्य जीवों के शिकार पर आश्रित था। मध्य पाषाण काल (मुख्यतः नव पाषाण काल) में वह पशुओं को पालने लगा तथा कृषि कार्य करने लगा। इसके बाद के काल में मनुष्य ने संसाधनों का निरन्तर अधिकाधिक उपयोग करते हुए अपनी आर्थिक प्रगति किया। इस तरह की प्रगति के लिए मनुष्य को उन्नत तकनीक विकसित करने करने की आवश्यकता पड़ी। उन्नत तकनीक के बिना पर्याप्त उर्जा विकसित नहीं की जा सकती है। वर्तमान समय में लकड़ी, कोयला, पेट्रोल आदि ऊर्जा के विभिन्न स्रोत हैं जो किसी न किसी रूप में वनों से प्राप्त जैव तत्व से ही निर्मित हैं। जल से प्राप्त ऊर्जा (जल विद्युत) पर भी अप्रत्यक्ष रूप से वनस्पतियों का ही प्रभाव पड़ता है, क्योंकि वनस्पतियाँ ही जल-तंत्र को नियंत्रित करती हैं। वस्तुतः अणु ऊर्जा के अतिरिक्त अन्य किसी भी स्रोत से प्राप्त ऊर्जा सौर्य ऊर्जा का ही परिवर्तित रूप है। वनस्पतियाँ सौर्य ऊर्जा एवं संसाधनों का सबसे बड़ा स्रोत है। मनुष्य ने वनस्पतियों के इस उपयोगिता का ज्ञान बहुत पहले प्राप्त कर लिया था। लेकिन वर्तमान औद्योगिक युग में मनुष्य ने आर्थिक विकास की अंधी दौड़ में वनस्पतियों के पारिस्थितिकीय संतुलन के महत्व पर ध्यान नहीं दिया है, जिसके कारण उनको आवश्यकता से अधिक विनाश किया है। पारिस्थितिकीय संतुलन को

बनाये रखने के लिए वनस्पति को अपेक्षित मात्रा में सुरक्षित रखना आवश्यक है।

सहरसा जिला में प्राकृतिक वनस्पति संसाधन का अभाव है, फिर भी यहाँ 283 एकड़ में प्राकृतिक वनस्पति है। प्राकृतिक वनस्पति में यहाँ कोई वन क्षेत्र नहीं है बल्कि गृह निर्माण के लिए घास (खर) हेतु खरहौर जिसमें खर (घास) तथा लकड़ी के लिए कुछ वृक्ष पाये जाते हैं। इस तरह की वनस्पति कुछ गाँवों के छोटे क्षेत्र में होता है, पहले इस तरह का घास क्षेत्र अधिक थी, लेकिन कुछ वर्षों से खर (घास) का माँग कम होने से खरहौर को कृषि भूमि बना लिया गया है, फिर भी वर्तमान समय कुल क्षेत्र का 0.1 प्रतिशत क्षेत्र इसकी अन्तर्गत है।

कोशी क्षेत्र के कुछ भागों में जहाँ बालू का निक्षेप पाया जाता है। जहाँ बालू में उर्वरता क्षमता नगण्य है वहाँ अपने-आप कास पट्टर, झौआ आदि प्राकृतिक वनस्पति के रूप में उगते हैं। काश का उपयोग घर बनाने में तथा पटोर से चटाई बनायी जाती है। इस प्रकार की वनस्पति नौहट्टा, महिषी, सिमरीबख्तियारपुर, सलखुआ तथा सोनवर्षा प्रखण्ड के दिराया क्षेत्र में कोशी नदी के किनारे पायी जाती है।

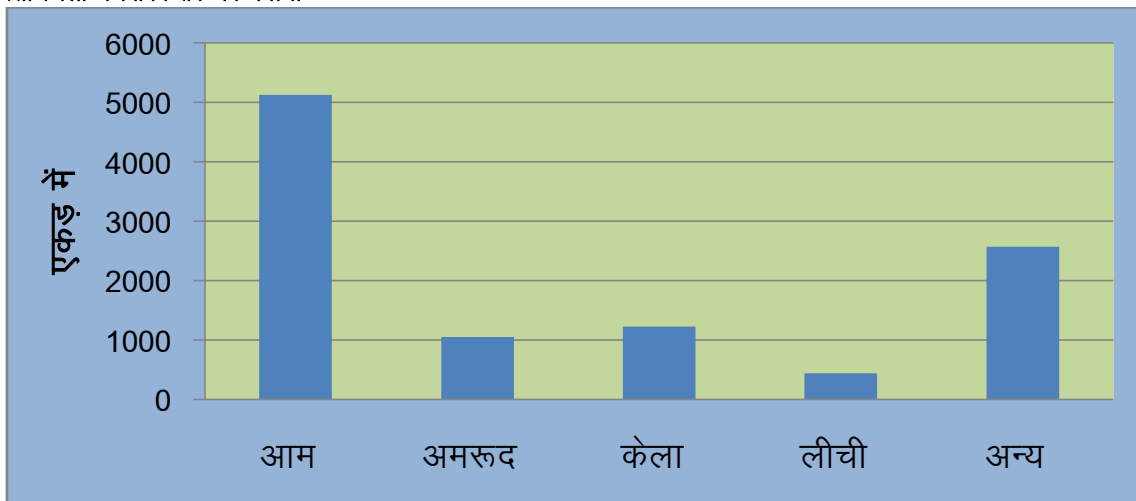
सहरसा जिला में प्राकृतिक वनस्पति नगण्य है, लेकिन यहाँ मानव कृत विभिन्न प्रकार के फलों एवं वृक्षों के बगीचे पाये जाते हैं, वृक्षों में सर्वाधिक फलदार वृक्ष है जिसमें आम का बगीचा सबसे अधिक है। यहाँ के कुल क्षेत्रफल का 2.2 प्रतिशत बगीचा या तरु वृक्ष है। इन बगीचों में विभिन्न प्रकार के वृक्षों के बगीचा का क्षेत्रफल निम्न आँकड़ों से स्पष्ट होता है :-

तालिका – 5.1 सहरसा जिला में विभिन्न प्रकार के फल वृक्षों का बगीचा

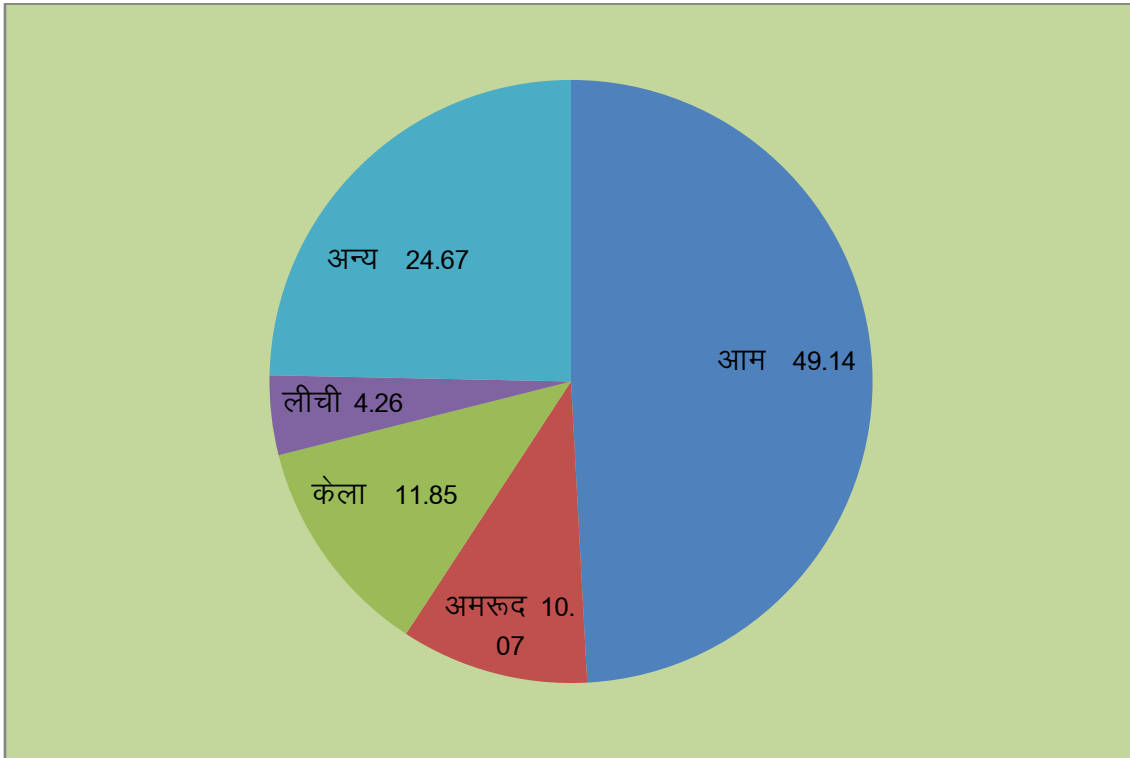
क्र०म०	वृक्षों का नाम	क्षेत्रफल (एकड़ में)	कुल बगीचा क्षेत्र का प्रतिशत
1	आम	5127	49.14
2	अमरुद	1051	10.07
3	केला	1236	11.85
4	लीची	445	4.26
5	अन्य	2575	24.67

स्रोत – जिला सांघिकी विभाग सहरसा एवं वन विभाग, सहरसा

सहरसा जिला में विविध तरु का बगीचा



कुल बगीचा क्षेत्र का प्रतिशत



तालिका 5.1 में सहरसा जिला में बगीचा में विभिन्न प्रकार के फलों का बगीचा का क्षेत्र दर्शाया गया है। सम्पूर्ण जिला में क्षेत्रफल का 10434 एकड़ भूमि में मानव कृत वनस्पति पाया जाता है, जिसमें सबसे अधिक क्षेत्र में आम का बगीचा पाया जाता है, इसका कुल क्षेत्र 5127 एकड़ जो कुल बगीचा का 49.14 प्रतिशत है। अमरूद बगीचा का क्षेत्र 1051 एकड़ (10.77 प्रतिशत) केला 1236 एकड़ (11.85 प्रतिशत) लीची 445 एकड़ (4.26 प्रतिशत) अन्य बगीचा 2575 एकड़ (24.68 प्रतिशत) क्षेत्र में विभिन्न प्रकार के तरु वृक्ष है, अन्य बगीचा में शीशम, कटहल, कदम, सहतूत, सागवान, बॉस, महुआ, महोगनी आदि के वृक्ष पाये जाते हैं। इनमें अधिकांश इमारती लकड़ी के वृक्ष पाये जाते हैं। यहाँ के लोग आम का बगीचा अधिक लगाते हैं, क्योंकि आम से प्रति वर्ष एक मुस्त अच्छी रकम मिल जाता है। जिससे किसानों की नकदी आवश्यकता की पूर्ति होती है। बगीचा से कई तरह का प्रत्यक्ष लाभ किसानों को होता है जो निम्न प्रकार है :-

1. बगीचा से प्रत्येक वर्ष किसानों को फल के रूप में व्यापारी से निश्चित रकम मिल जाता है जिससे किसानों को नकदी आवश्यकताओं की पूर्ति होती है साथ आर्थिक विकास में सहयोगी भी होता है।
2. बगीचा में पेड़ पूंजी से रूप में अगले संतानों के लिए सुरक्षित रहता है। बगीचा पुराना होने पर उच्च कीमत पर पेड़ की बिक्री हो जाती है।

सूख जाता है, फिर भी ऊपरी भूमि में बॉस तथा अन्य कुछ वृक्ष पाये जाते हैं। प्रखण्डवार बगीचा के क्षेत्र का विवरण निम्न आँकड़ों से स्पष्ट है :-

3. भूमि अपरदन की समस्या नहीं रहती है।
4. भूमि में उर्वरता शक्ति में वृद्धि होती है।
5. फल का प्रतिवर्ष उत्पादन व्यय नगन्य होता है।
6. ग्रामीण क्षेत्र का वायुमण्डल में ऑक्सीजन की पर्याप्त मात्रा वनस्पति से मिल जाता है।
7. यही ऑक्सीजन गतिशील हवा शहरी क्षेत्र को प्रदान करता है।
8. बगीचा में शहरी क्षेत्र के फल की आपूर्ति होती है।
9. अनेक प्रकार के उद्योगों का कच्चा माल बगीचा के लकड़ी से मिल जाता है।
10. गृह निर्माण में लकड़ी का उपयोग किया जाता है।
11. वातावरण को स्वच्छ एवं वर्षा में सहायक होता है।
12. मिट्टी में उर्वरता बढ़ाने में अहम भूमिका होती है।
13. भूमिगत जल को Recharge करने में वनस्पति का योगदान होता है।
14. ग्रामीण क्षेत्र में 60 प्रतिशत ईंधन वनस्पति से प्राप्त होता है।

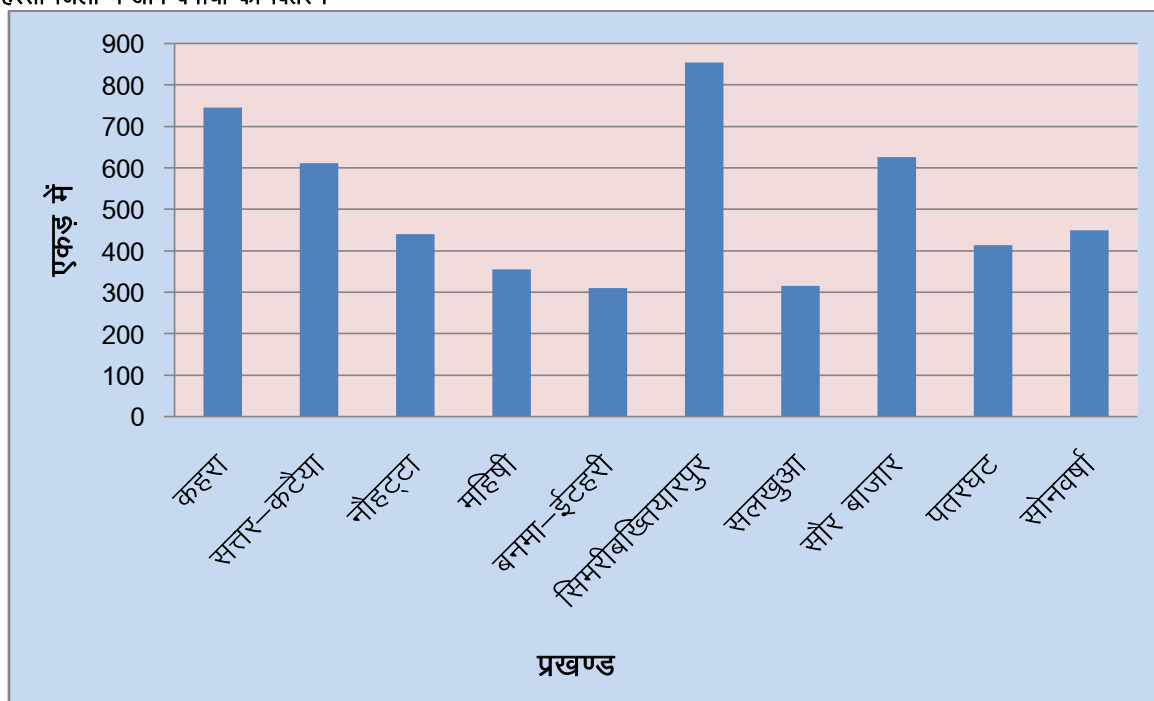
सहरसा जिला में बगीचा का वितरण प्रखण्डों में कोशी का दियारा क्षेत्र है, जहाँ बगीचा का अभाव होता है। कोशी द्वारा प्रतिवर्ष बाढ़ से बगीचा

तालिका – 5.2 सहरसा जिला में बगीचा का क्षेत्रीय विवरण (क्षेत्रफल एकड़ में)

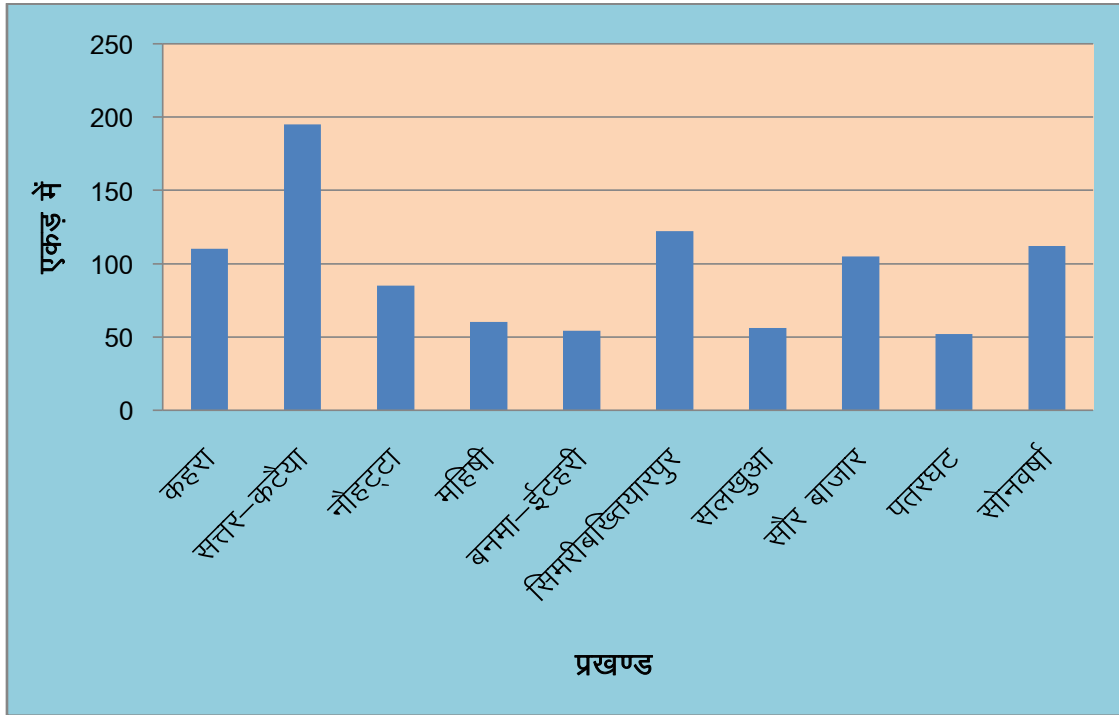
क्र०	प्रखंड	आम	अमरुद	लीची एवं कटहल	अन्य
1	कहरा	746	110	26	540
2	सत्तर-कटैया	612	195	56	992
3	नौहट्टा	441	85	21	410
4	महिषी	356	60	10	295
5	बनमा-ईटहरी	310	54	20	310
6	सिमरीबख्तियारपुर	855	122	25	317
7	सलखुआ	316	56	12	219
8	सौर बाजार	627	105	29	455
9	पतरघट	414	52	17	351
10	सोनवर्षा	450	112	29	322

स्रोत – सांख्यिकी विभाग, सहरसा

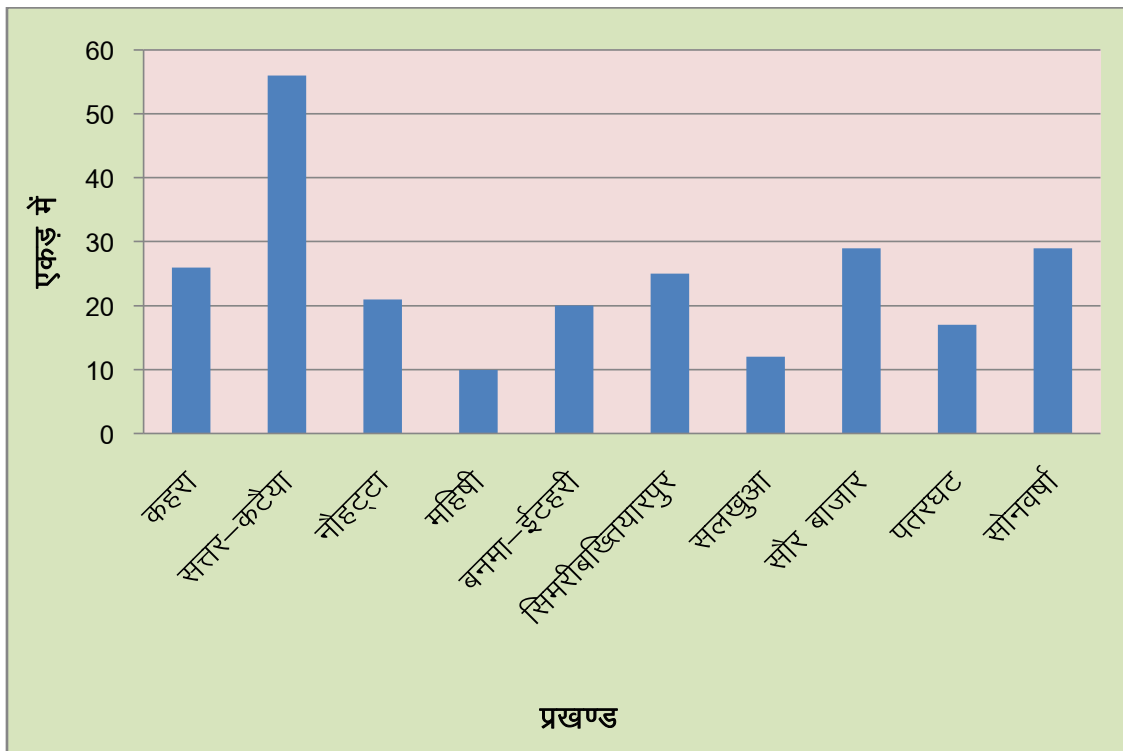
सहरसा जिला में आम बगीचा का वितरण



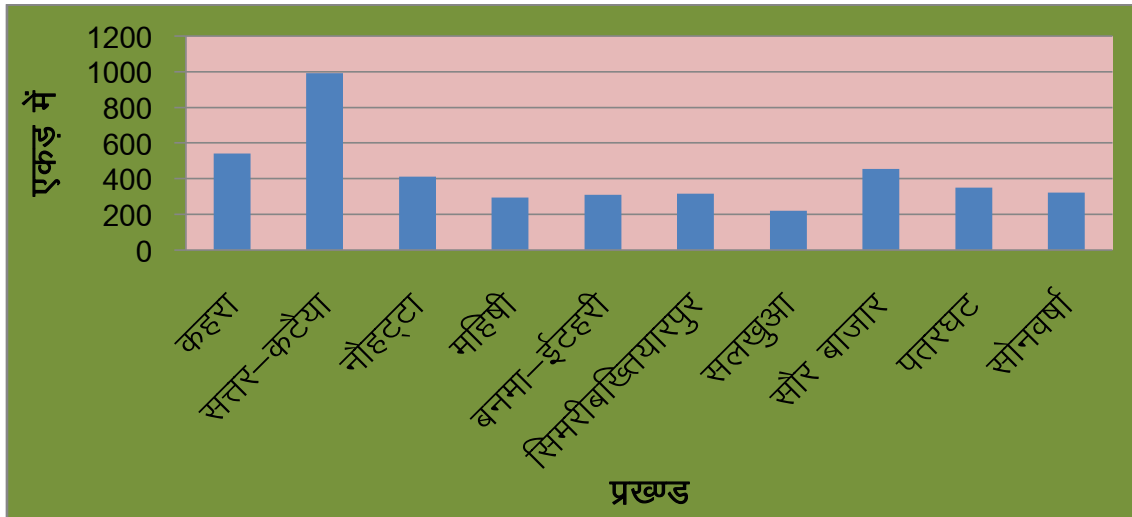
सहरसा जिला में अमरुद बगीचा का वितरण



सहरसा जिला में लीची बगीचा का वितरण



विविध वृक्षो का वितरण



तालिका 5-2 में प्रखण्डवार बगीचा का वितरण दर्शाया गया है जिसमें आम का बगीचा सबसे अधिक पाया जाता है। आम फलदायी वृक्ष होता है तथा यहाँ की मिट्टी एवं जलवायु आम के विकास के लिए उपयुक्त है। प्रखण्डवार विभिन्न फसलों के बगीचा के क्षेत्र में असमानता पायी जाती है। कहरा प्रखण्ड में आम 746 एकड़ अमरुद 110 एकड़ लीची 26 एकड़ अन्य वृक्ष का बगीचा 540 एकड़ में है। सत्तर कटैया में आम 612 एकड़ अमरुद 195 एकड़ लीची 26 एकड़ तथा अन्य 592 एकड़ में पाया जाता है। नौहट्टा का कुछ भाग कोशी दियारा क्षेत्र है अन्य क्षेत्रों में आम 441 एकड़ अमरुद 85 एकड़ लीची 21 एकड़ अन्य 410 एकड़ में फैला हुआ है। महिषी प्रखण्ड का अधिकांश भाग कोशी दियारा का क्षेत्र है इसलिए बगीचा अपेक्षाकृत कम क्षेत्र में है। यहाँ आम 356 एकड़ अमरुद 60 एकड़ लीची एवं कटहल 10 एकड़ तथा अन्य वृक्षों का बगीचा 295 एकड़ है। बनमा ईटहरी में आम 310 एकड़ अमरुद 54 एकड़ लीची एवं कटहल 20 एकड़ तथा अन्य वृक्षों

को बगीचा 310 एकड़ है। सिमरीबख्तियारपुर में आम 855 एकड़ अमरुद 122 एकड़ लीची 25 अन्य 317 एकड़ में है। सलखुआ प्रखण्ड का अधिकांश भाग कोशी बाढ़ का क्षेत्र है अतः यहाँ बगीचा का क्षेत्र अपेक्षाकृत कम है, यहाँ आम 310 एकड़ अमरुद 56 एकड़ लीची 12 एकड़ तथा अन्य 219 अमरुद 105 एकड़ लीची 17 एकड़ एवं अन्य 351 एकड़ में बगीचा है। पतरघट में आम 414 एकड़ अमरुद 52 एकड़ लीची 17 एकड़ एवं अन्य 361 एकड़ क्षेत्र में फैला हुआ है। सोनवर्ष प्रखण्ड में 450 एकड़ में आम, 112 एकड़ में अमरुद 214 एकड़ में लीची कटहल तथा 322 एकड़ में अन्य वृक्ष के बगीचा है। बगीचा प्रायः हर क्षेत्र हरगाँव में अधिकांश के आस पाया लगाया जाता है।

अगर उत्तरी बिहार के कुछ जिला में वनस्पति का तुलनात्मक स्वरूप देखे तो सहरसा सुपौल, मधेपुरा में अपेक्षाकृत कम बगीचा का क्षेत्र है जो निम्न आँकड़ों से स्पष्ट है :-

तालिका - 5.3 बगीचा का अन्य जिलों से तुलनात्मक स्वरूप क्षेत्रफल (क्षेत्रफल एकड़ में)

जिला	(एकड़ में)
कटिहार	34139
मधेपुरा	17417
सहरसा	10434
सुपौल	8417
पूर्णियाँ	51446

तालिका 5.3 में कोशी क्षेत्र को विभिन्न जिलों में वनस्पति क्षेत्र का तुलनात्मक स्वरूप को दर्शाया गया है, इसमें सबसे अधिक वनस्पति क्षेत्र पूर्णियाँ जिला में 51446 एकड़ है जबकि दूसरा स्थान कटिहार जिला का है यहाँ कुल वनस्पति क्षेत्र 34129 एकड़ है। तीसरा स्थान मधेपुरा का है यहाँ कुल वनस्पति क्षेत्र 147417 एकड़ तथा चौथा स्थान सहरसा का है यहाँ केवल 10434 एकड़ में वनस्पति फैला हुआ। सुपौल, सहरसा में बड़ा जिला होने के बावजूद भी वनस्पति का क्षेत्र सहरसा जिला की अपेक्षा कम है। यहाँ कुल वनस्पति क्षेत्र 8417 एकड़ है जो जिला के कुछ क्षेत्र का 1.58 प्रतिशत है जबकि सहरसा में वनस्पति क्षेत्र कुछ क्षेत्र का 2.2 प्रतिशत है।

सहरसा जिला में जनसंख्या का अत्याधिक विस्फोट के कारण वन क्षेत्र को साफ कर कृषि भूमि बना लिया है जिसमें कृषि क्षेत्र में वृद्धि हुई, लेकिन वन क्षेत्र का हास हुआ। वर्तमान समय वनस्पति केवल बगीचा के रूप में पाये जाते हैं। वन विनाश से मिट्टी अपरदन एवं मिट्टी में उर्वरता का हास हो रहा है।

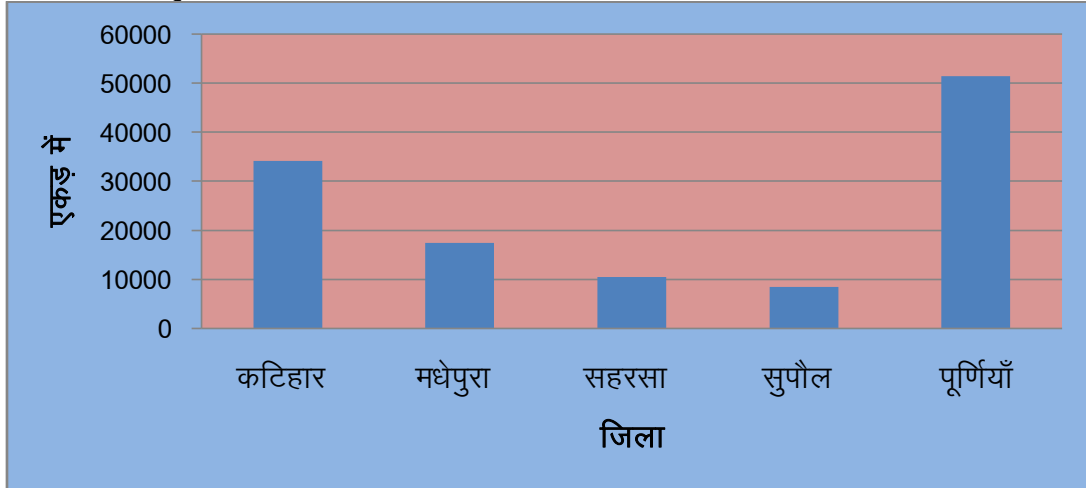
वन के महत्त्व के संबंध में एक फ्रांसीसी कहावत है :-

" Forest Precede civilization but desert succed them"

आर्थिक विकास में खनिज पर आधारित अर्थ व्यवस्था को लुटेरी अर्थ व्यवस्था की संज्ञा दी जाती है।

खनिज अनवीकरणीय संसाधन है, लेकिन वनस्पति को **Green Gold** की संज्ञा दी गई है। वनस्पति नवीकरणीय संसाधन है। अध्ययन क्षेत्र में वनस्पति सुरक्षात्मक प्रवृत्ति का है, जो जल की गति को रोककर बाढ़ की विभिषिका को नियंत्रित करता है। **U.S.A** के कृषि विभाग के अनुसार प्रतिवर्ग मील वनस्पति पर्यावरण में एक घन मील फीट जल प्रदान करता है। वनस्पति वातावरण को नम बनाये रखता है तथा वर्षा होने में सहायक है, अतः इसे **Rain Holder** तथा **Rain Banker** कहा गया है।

बगीचा का अन्य जिलो से तुलनात्मक स्वरूप



सहरसा जिला में विभिन्न प्रकार के फलों का उत्पादन निम्न आँकड़ों से स्पष्ट है:-

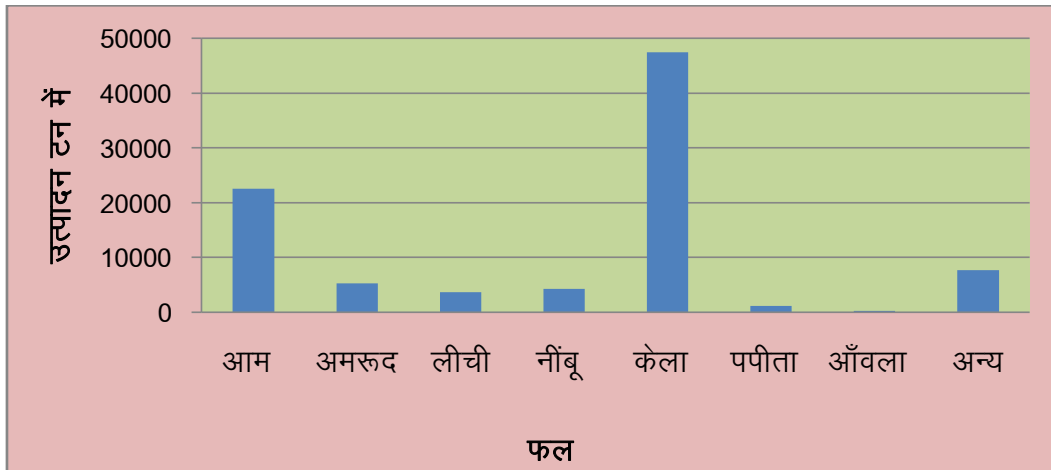
तालिका - 5.4

फल	उत्पादन मी0 टन में
आम	22621
अमरुद	5357
लीची	3719
नींबू	4295
केला	47469
पपीता	1198
आँवला	337
अन्य	7733

तालिका 5.4 में सहरसा जिला में फलों का उत्पादन दर्शाया गया है जिसमें सबसे अधिक आम का उत्पादन 22621 टन होता है जबकि अमरुद 5357 टन, लीची 3719 टन, नींबू- 4295 टन, केला 47469 टन, पपीता 1198 टन, आँवला 327 टन तथा

अन्य फले 7733 टन उत्पादन होता है। यहाँ से आम बड़े पैमाने पर दूसरे क्षेत्र को भेजा जाता है। फलों में आम यहाँ की मुख्य फल है। वनस्पति संसाधन में फलों का उत्पादन अपना विशिष्ट स्थान रखता है।

सहरसा जिला में फसलो का उत्पादन



निष्कर्ष :- सहरसा जिला में वन एवं बगीचा के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि यहाँ वन क्षेत्र समाप्त हो चुका है। लेकिन मौसमी कास, झुआ आदि प्राकृतिक वनस्पति केवल को पी बाढ़ क्षेत्र के रेतीली भूमि पर उगती है। अन्य क्षेत्रों में वन को साफ कर कृषि भूमि में बदल दिया गया है। यहाँ वनस्पति के रूप में बगीचा पाया जाता है, जिसे मानव अपनी आवश्यकतानुसार फलदार एवं

इमारती लकड़ी के वृक्ष लगाये जाते है। आम, अमरुद आदि फलो एवं वॉस के बगीचा से प्रति वर्ष एक निश्चित रकम किसानो को प्राप्त होता है। यदपि प्राकृतिक वनस्पति की अपेक्षा बगीचा अधिक लाभकारी एवं सुरक्षित है, लेकिन इसका क्षेत्र कुल क्षेत्रफल का 2.2 प्रतिशत होने से पर्यावरण संरक्षण के लिए अप्रयाप्त है।

—: संदर्भ सूची :-

1. Bose S.R - Agro-Economic Survey of Bihar.
2. Bharucha J. P. 1982 - Vegetation of india Oxford India Bombay.
3. Choudhary P.c Ray 1965 & District Gazetter saharsa and Purnea.
4. Dayal P. 1953 Bihar in Maps Patna
5. Das P.S 1996 - The Monsoon - National Book Trust land New Delhi.
6. Jha P.P 1958 - Soil of Bihar state soil special No-62 Bihar agriculture college Bhagalpur.
7. Jha Dr. V.M – Irrigation and agriculture developemt Deep and Deep Publication New Delhi.
8. चौहान पी० आर० एवं प्रसाद महातम – भारत का वृहद भूगोल वसुन्वारा प्रकाशनगोरखपुर
9. जाट बी. सी. – जलसंग्रह प्रबन्धन पोइन्ट पब्लि तन जयपुर
10. डॉ बी.पी. राव. एवं आर. वी. पी. सिंह – बिहार का भौगिलिक स्वरूप बसुन्धारा प्रका तन गोरखपुर
11. पंडित वाद 2009 – बिहार का भौगोलिक अध्ययन ।